News from various papers and websites

MN Buch was never afraid to speak his mind, says chief minister

HT Zerrespondent

schellenbergerer

BHCPAL Former civil servent
Mancels Nechbarati Buch was
cernated will full stat herrouse on Sanday morning of
the Blaufflanda creman richr
Chief minis w. Shievej Singe
Chouden, other accessory
An horty de Sa BCP Sumendra
Single, stats observin contails
source R Forestury
And horty de Sa BCP Sumendra
single stats observin contails
source R Forestury
And Visional Research
And Supposite To Sanday
Buch Target
He Forestury
He Forest



Chief minister Shivraj Singi: Chou van carries former bureaucrat MR Bush's body to Bhadbhada crematorium in Bhopal on Sunday.

 310534 МАКУАНТ FHOTO

stways concerned about a law as Enginesing in the stobars was regregating the stobars are very when whole or call of any officers to eith em what had gone wrong and what needs to be conserted.

It is said that a beforing rather concerned begins to the former bursaucrast is the administers the officers would be located, for the levelopment of filtipot called a prison meeting at the ASE gives to be so men bursaucrast. The LASE association of the levelopment of filtipot called a prison meeting at the ASE gives to be as in 4.56 gives to box at 4.56 give



Jawans give guard of honour to Buch.

He symbolised the best of civil service

It is unfect very sed that Mr.
It is unfect very sed that Mr.
It is unfect very sed that Mr.
It is unfect to fur it is synthetised to be saved under the fur it is unfect of us to a very produced.

For a very leng time especially for choose? we wise here specially for choose? we wise here specially for choose? we wise here specially for choose? we have been greated in the service, hereaft in the our manners that are not a responsible to Physial's second unsuffernation.

The first transformation.

The first transformation.

The first transformation output. In November 1858, Multi-west-friendly to Education he became the endr interna-

see The only trade alone
the became their instrutor of Bronet frame; an
tor of the see alone
their prevention of the see alone
their prevention of the order
to only as their forests emention
to a their forests emention
to a their forests emention
to account of their see alone
to the state of their see alone
to the see alone
their prevention.

The difference is the see alone
their difference
That hower bin circ.

That known thin thee '962, when the vess In con-keen of Betal Myfather was the divisional enginee; MPBB, at Bors, with Fetti as part of his jurial festion then. Shoce hen Mir Buch was a regular "isiturit, our residence in both Loca, and



Bhopal.

Ireallatorading afterthat to min't the hargumtion of cleaniflection of avilage in 'shat labitical, also,
he devided to we have a selected or
turn upon una so class.

When the fame this second me turn upon una so class.

When the fame this second in the complaint of bard did not via this frequent cannot a most lab selected in the second in the second in the second and labitical threat selection of the second in the sec

Use 1 go w more minimore frequently. By will indeed be difficient to believe it of the animily had out it service in 190 method and the age of 31. That was it years again. They will be all of to say and they will be all of the all

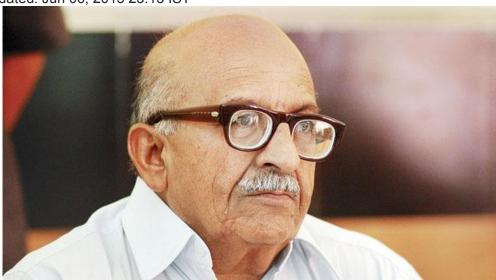
the years to come, for such people don't come by so con if y Neverthelesson elevents which are not widely known.

per le control de la consensation de la consensatio

Former bureaucrat MN Buch passes away in Bhopal

HT Correspondent, Hindustan Times, Bhopal

Updated: Jun 06, 2015 23:13 IST



Retired IAS officer MN Buch passed away in Bhopal on Saturday. (HT photo)

M N Buch, former bureaucrat and commonly referred to as 'architect of new Bhopal' for the urban planning concepts that he introduced in the city, died following a brain stroke on Saturday evening. He was 80.

Buch had been admitted to local Bansal Hospital after developing heart complications on June 4 and underwent angioplasty.

However, he got a paralytic attack early this evening and succumbed to it at 7.30pm, senior cardiologist with the hospital Dr Skand Trivedi confirmed to HT.

He is survived by wife Nirmala, ex-chief secretary of MP and son Vineet, who stays in USA.

A Padma Bhushan awardee, Buch sought voluntary retirement from Indian Administrative Services in 1984 and took up social activities.

An expert in housing, forestation, town planning and environmental protection, he set up the NGO National Centre for Human Settlements and Environment (NCHSE).

Born on 5th October 1934, he was known for his clear views on betterment of Bhopal and Madhya Pradesh, especially in context of urban planning and environment protection.

He was also the chairman of the Board of Governors ABV - Indian Institute of Information Technology and Management at Gwalior.

He received UNEP award for the implementation of desertification control program in 1994-95 and Aga Khan Award for Architecture in 1998.

The funeral procession would start from his E-4, Arera Colony residence at 11.30am and last rites would be performed at Bhadbhada crematorium.



Architect of modern Bhopal and ex-bureaucrat M N Buch passes away

Bhopal, June 7

Former bureaucrat M N Buch, who was widely regarded as the architect of modern Bhopal, passed away here on Saturday evening following a brain stroke. He was 80.

एमएन बुच का निधन

भोपाल | हर जरूरी मुद्दे पर सक्रिय और सच के पक्ष में आवाज बुलंद करने वाले पूर्व



प्रशासनिक अधिकारी महेश नीलकंठ बुच का शनिवार को देहांत हो गया। वे 80 साल के थे। अंतिम यात्रा रविवार सुबह 11:30 बजे अरेरा कॉलोनी स्थित निवास

ई-4/17 से भदभदा विश्वामघाट जाएगी। उनके परिवार में पत्नी पूर्व मुख्य सचिव निर्मला बुच हैं। बेटा विनीत सेनफ्रांसिस्को में है। चार जून को हार्ट अटैक के बाद उन्हें बंसल हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था, जहां उनकी सफल एजियोप्लास्टी हुई। कार्डियो-फिजिशियन डॉ. स्कंद त्रिवेदी ने बताया कि शनिवार दोपहर पैरालिसिस हुआ और शाम करीब साढ़े सात बजे ब्रेन स्ट्रोक के बाद बुच ने आखिरी सांस ली। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया है। निधन का समाचार पाकर पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह, मुख्य सचिव अंटोनी डिसा, पूर्व मुख्य सचिव केएस शर्मा समेत राजनीति, प्रशासन, समाजसेवा और पयांवरण से जुड़े उनके कई सहयोगी-शुभिवंतक शोक व्यक्त करने आए। शेष पेज 8 पर

भोपाल का विकास बुच साहब की देन पेज-4

पेज 1 के शेष

एमएन बुच का...

तीस साल का सक्रिय सेवानिवृत्त जीवन, सच के पक्ष में सदैव आक्रामक

1984 में प्रशासनिक सेवा से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने के बाद बुच कभी बेफिक्र होकर खामोश नहीं बैठे। बैतूल लोकसभा सीट से स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में वे असलमें शेरखान के खिलाफ चुनाव मैदान में भी उतरे और दूसरे नंबर पर एक लाख से ज्यादा वोट मिले। सरकार किसी की भी रही हो, शहरी विकास, कृषि, पर्यावरण से लेकर लालफीताशाही और भ्रष्टाचार तक हर जरूरी मुद्दे पर बुच की बुलंद आवाज सदैव सच के पक्ष में गूंजती रही। उन्हें नजदीक से जानने वालों में किसी के अनुभव में नहीं है कि वे कभी बीमार, असक्त या खामोश हुए हों। भोपाल सिटीजंस फोरम साक्षी है कि राजधानी में उनका 30 साल का सेवानिवृत्त जीवन किस तरह रचनात्मक सक्रियता से भरा रहा। अर्बन् प्लानिंग पर उनकी चार किताबें हैं। राजनीति या प्रशासन में जहां भी कोई खामी-खराबी सामने आती, बुच अपने आक्रामक तेवरों से ही सामने आते। सुबह की सैर और व्यायाम के साथ दिन की शुरुआत करने वाले बुच ने स्कूल की पढ़ाई गुजरात में की। दिल्ली में ग्रेजुएशन के बाद कैम्ब्रिज गए। 1957 में प्रशासनिक सेवाओं में आए और गुजरात से लेकर मध्यप्रदेश तक कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे। प्रदेश में वे अर्बन प्लानिंग विभाग में प्रमुख सचिव थे। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में पीजी की पढ़ाई के दौरान पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के सपंकी में आए थे। वरिष्ठ पत्रकार अभिलाष खांडेकर बताते हैं कि बुच का सीधा संपर्क डॉ. सिंह से हमेशा बना रहा। बतौर प्रधानमंत्री डॉ. सिंह नक्सल समस्या और अर्बन प्लान जैसे विषयों पर उनसे बात करते थे। भोपाल में रहकर भी उनकी मौजूदगी बड़ी व्यापक थी। पिछले साल ही वन और पर्यावरण कानून में रद्दोबदल के लिए बनी टीएसआर सुब्रह्मण्यम कमेटी पर मुखर विरोध जताने वाले वे अकेले थे।

बुच के दिल में धड़कता था भोपाल, आज भोपाल वालों ने उन्हें दिल से याद किया

राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार

सिटी रिपोर्टर भोपाल

आधुनिक भोपाल के शिल्पी पूर्व आईएएस अफसर महेश नीलकंठ बुच रविवार को पंचतत्व में विलीन हो गए। भदभदा विश्रामधाट पर राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार हुआ। मुखाग्नि उनके छोटे भाई व गुजरात के पूर्व मुख्य सचिव महेंद्र बुच ने दी। उनकी अंतिम यात्रा ब्युरोक्रेट, राजनेता, उद्योगपति और समाजसेवी शामिल हुए। नेताओं ने उन्हें तेजतर्रार तो अफसरों ने ईमानदार अफसर बताया।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि बुच साहब की स्मृति को चिर स्थायी बनाने के लिए विचार कर निर्णय लिया जाएगा। इससे पहले सुबह से ही अरेरा कॉलोनी स्थित आवास पर बुच साहब को श्रद्धांजलि देने वालों का तांता लगा रहा।



पूर्व आईएएस अफसर एमएन बुच के घर पहुंचकर रविवार को दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने उन्हें श्रद्धांजिल अर्पित की।

वे ब्यूरोक्रेट नहीं, सोशल रिफॉर्मर थे

बुच साहब जब भी मिलते थे, ऊर्जा से भरे रहते थे। मुलाकात कभी-कभी होती थी, लेकिन चिडियां तो हर माह मिलती थीं। भोपाल या प्रदेश के विकास को लेकर पत्र के माध्यम से चिंता व्यक्त करते थे। बेबाक लिखते और बेबाक कहते थे। मैंने बचपन में उनका नाम पहली बार तब सुना था, जब भोपाल में एक बिल्डिंग तोडी गई थी। जब लोग वहां से निकलते थे, तब कहते थे कि यह बिल्डिंग बच साहब ने तुडवाई। छोटा था, तब से मेरी नजरों में उनकी ईमानदार अफसर की छवि थी। भोपाल का वर्तमान स्वरूप उनकी देन हैं। वे केवल ब्यूरोक्रेट नहीं, सोशल रिफॉर्मर थे।

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

बुच साहब से मेरी पहली मुलाकात तब हुई, जब वे उज्जैन कलेक्टर थे। वे गलत बात का विरोध करने में कतराते नहीं थे। वे जनहित के लिए काम करने वाले अफसर थे। पर्यावरण के प्रति हमेशा सजग रहे। सरकार और समाज को इस विषय में सोचना चाहिए कि उनकी स्मृति अमिट रह जाए।

रमेशचंद्र अग्रवाल, चेयरमैन, भास्कर समृह

में केंद्र में जब कार्मिक मामलों का मंत्री था, उस दौरान मेरे मंत्रालय में मध्यप्रदेश कॉडर के अफसरों की संख्या ज्यादा रही। उस दौरान अक्सर बुच साहब से मार्गदर्शन तिया। इतना नहीं वे जो सुझाव देते थे, उसे कैबिनेट सेक्रेटरी भी अक्षरशः मानते थे।

सुरेश पद्यौरी, पूर्व केंद्रीय राज्यमंत्री

उन्हें विरोधियों को भी मनाना आता था। एक बार का वाक्या है कि इतवारा से ट्रांसपोर्ट नगर शिफ्ट होना था। इसके विरोध में हम मैदान में आ गए, लेकिन बुच साहब ने ऐसी घुट्टी पिलाई की कि हम सभी ट्रांसपोर्ट नगर को कोकता शिफ्ट करने के लिए सहमत हो गए। कैलाश सारंग, पूर्व सांसद

ऐसे कर्मठ और ईमान्दार अफसरों की जरूरत है, जैसे बुच साहब थे। में शुरू से ही उनसे मार्गदर्शन लेता रहा। इससे हमेशा फैसले लेने में मदद मिली। सरेंद्र सिंह, डार्जापी



भदभदा विश्राम घाट पर बुच को श्रद्धांजलि देते मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान व अन्य।

एमएन बुच को दी अंतिम विदाई पार्थिव शरीर पंचतत्व में विलीन

भोपाल(खूरो)। सिटी प्लानर के रूप में विख्यात रिटायर आईएएस एमएन बुच को रिववार को अंतिम विदाई देने के साथ ही सशस्त्र बल की सलामी के बीच उनका पार्थिव शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया। अंत्येष्टि में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, कैबिनेट मंत्री, जनप्रतिनिधि और तमाम ब्यूरोक्नेट्स भदभदा विश्रामघाट पहुंचे।

शनिवार रात बुच का निधन एक निजी अस्पताल में हुआ था। उनकी अंतिम यात्रा अरेरा कॉलोनी स्थित निवास से निकली। मुख्यमंत्री ने पार्थिव शरीर को कांधा दिया। भदभदा विश्रामघाट पर बुच के अनुज महेंद्र ने मुखाग्नि दी। बुच की दोनों भतीजी भी यहां मौजूद थीं, जबिक बेटे विनीत अमेरिका से सोमवार तक यहां पहुंच पाएंगे। इस मौके पर सीएम ने कहा कि भोपाल के मौजूदा स्वरूप का श्रेय बुच साहब को ही है, वे हमारे मागदर्शक भी थे। जब भी कोई समस्या आती थी, हम उनसे राय मांगते थे और वे बहुत साफ शब्दों में बेबाकी से अपनी राय देते थे। उनकी याद को चिरस्थायी बनाने के लिए विचार करके निर्णय लिया जाएगा। अंत्येष्टि के मौके पर पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश पचौरी, गृह मंत्री बाबूलाल गौर, सांसद आलोक संजर, विधायक रुस्तम सिंह, विश्वास सारंग, पूर्व सांसद कैलाश सारंग, कलेक्टर निशांत



रविवार को आवास पर निर्मला बुच को सांत्वना देतीं दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री सीएम शीला दीक्षित।

बरवड़े और शहर के विभिन्न तबके के लोग मौजूद थे। रविवार सुबह बुच के निवास पर श्रद्धांजिल देने वालों का तांता लगा रहा। यह सिलसिला सुबह सात बजे से ही शुरू हो गया था। पूर्व मुख्यसिचव आदित्य विजय सिंह, अविन वैश्य, आर.परशुराम समेत कई आईएएस-आईपीएस अधिकारियों, मुख्यसिचव अंटोनी डिसा, डीजीपी सुरेंद्र सिंह, जिला कांग्रेस अध्यक्ष पीसी शर्मा आदि सुबह ही बुच के निवास पर पहुंच गए थे।

राजकीय सम्मान के साथ हुआ अंतिम संस्कार

सीएम सहित राजनेता-अफसर हुए शामिल



रव, बुच को श्रद्धांजिल देते मुख्यमंत्री शिवराज सिंह सहित अन्य।

भोपाल. पूर्व वरिष्ठ आईएएस अधिकारी एमएन बुच का अंतिम संस्कार रिववार को भदभदा विश्राम घाट पर राजकीय सम्मान के साथ किया गया। सीएम शिवराज सिंह चौहान ने स्वर्गीय बुच के पार्थिव शरीर पर पुष्पचक्र अर्पित कर श्रद्धांजिल दी। सीएम ने कहा कि भोपाल के वर्तमान स्वरूप का श्रेय स्व. बुच को जाता है। वे कुशल नगर नियोजक और देश में भोपाल की पहचान थे। वे नौकरशाह ही नहीं, बल्कि गरीबों के हित में बेहतर काम करने वालों के लिए प्रेरणा थे। बेबाक और खरी बात कहते थे। दिल्ली की पूर्व सीएम शीला दीक्षित ने भी बच के परिवार से मिलकर संवेदनाएं व्यक्त की।

लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन ने कहा कि स्वर्गीय बुच बहुत कुशल अधिकारी थे, उन्होंने प्रदेश के कई शहरों का मास्टर प्लान तैयार करने में अहम रोल अदा किया। इसिलए उन्हें रियल सिटी प्लानर माना जाता था। पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश पचौरी ने कहा कि स्वर्गीय बुच ईमानदार प्रशासक के रूप में हमेशा याद रखे जाएंगे। भोपाल को सुंदर और व्यवस्थित बनाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस अवसर पर सांसद आलोक संजर, विधायक विश्वास सारंग, कैलाश नारायण सारंग, सीएस अंटोनी हिसा, डीजीपी सुरेंद्र सिंह सिहत राजनेता, ब्यूरोक्रेट्स, बिजनेस, आर्ट और समाजसेवा से जुड़े लोगों के साथ परिजन, रिश्तेदार, गुजराती समाजजन शामिल हुए।

स्मातया

•स्मृति शेष

भोपाल का विकास बुच साहब की देन

मैने दोस्त नहीं भाई खोया है। हम दोनों 1957 बैच के आईएएस थे, एक साथ सेवा में आए। दोनों के पिताजी भी आपस में धनिष्ठ मित्र थे। उनसे मेरा संबंध पारिवारिक रहा। नौकरी में आने के बाद मेरी पोस्टिंग सागर में हुई उनकी मुरैना में। वे गुजरात के राजकोट से थे। मैं दिल्ली से था। नौकरी में तो हम एक साथ नहीं रहे, लेकिन 1984 में रिटायरमेंट के बाद जरूर रोजाना दिन में दो बार किसी भी विषय पर चर्चा जरूर करते थे, खासतौर पर स्पोटर्स पर। बुच साहब शहरी विकास के तो राष्ट्रीय स्तर के विशेषज्ञ थे। भारत सरकार ने उन्हें 2011 में



पद्म भूषण से सम्मानित किया। बुच साहब मोरारजी भाई देसाई की सरकार में 1977 में दिल्ली डेवलपमेंट अथॉरिटी के डिप्टी चेयरमैन रहे। उस दौरान उन्होंने दिल्ली के विकास के लिए भी काम किया। उनकी जीवटता का अंदाजा

अरुण कुमार पंड्या तो इस बात से लगाया जा सकता है कि वे रिटायरमेंट के तीस साल बाद

भी एक्टिव थे। अक्टूबर 2003 में सिटीजन फोरम बनाया तो हम दोनों फाउंडर मेंबर थे। भोपाल का सनियोजित विकास तो वास्तव में उनकी ही देन है। उनके जाने से मप्र ने एक कर्मठ सिपाही खोया है। प्रदेश के हितों के लिए सभी स्तरों पर वे आवश्यकताओं के अनुसार लडते रहे, जब विरोधाभास ज्यादा हो गया तो उन्होंने सेवानिवृत्ति ले ली। जब मप्र से छत्तीसगढ़ अलग हुआ तो वे बेहद दुखी हुए।

(लेखक बच के साथ प्रशासनिक सेवा में रहे)



आधुनिक भोपाल के शिल्पी महेश नीलकंठ बुच अब हमारे बीच नहीं हैं। सख्त और ईमानदार प्रशासन के उनके तौर-तरीकों, जनता से गहरे जुड़ाव और जमीनी संपर्क से जुड़ी कई प्रेरक घटनाएं हैं। इनमें नई पीढ़ी के लिए कई सबक छिपे हैं। उन्हें श्रद्धांजिल सहित प्रस्तुत हैं कुछ ऐसे ही किस्से-

तब मुख्यमंत्री को ही कहना पड़ा- 'बुच साहब नहीं मानेंगे'

1970 के दशक में भोपाल नगर निगम के प्रशासक रहते हुए एमएन बुच ने अतिक्रमण हटाने में राजनीतिक हस्तक्षेप को बर्दाश्त नहीं किया। इतवारा में एक प्रभावशाली परिवार की बिल्डिंग का अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई चल रही थी। उस दौरान तत्कालीन मंत्री केएन प्रधान मौके पर पहुंचे और कार्रवाई रोकने को कहा। बुच ने साफ इनकार कर दिया। प्रधान अड़ गए, लेकिन बुच भी नहीं माने। दोनों के बीच तीखा विवाद हुआ, लेकिन कार्रवाई नहीं रुकी। नाराज प्रधान तत्कालीन मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुक्ल के पास पहुंचे और बुच की शिकायत की। शुक्ल ने प्रधान से कहा-'रहने दो, बुच साहब नहीं मानेंगे।'

विरोध का अनुठा तरीका

जब सरकार ने यह आदेश दिया कि सरकारी फाइलों में केवल हिंदी में ही टीप लिखी जाए तो एमएन बुच को यह नागवार गुजरा। वे हिंदी के विरोधी नहीं थे, लेकिन इस तरह अनिवार्यता थोपना उन्हें अच्छा नहीं लगा। बुच एक ऐसी डिक्शनरी लेकर आए, जिसमें अंग्रेजी शब्दों के क्लिप्ट अनुवाद थे। बुच ने उस डिक्शनरी के आधार पर फाइलों में टीप लिखनी शुरू की। हारकर यह आदेश वापस हुआ और कहा गया कि अंग्रेजी में भी टीप लिखी जा सकती है।

बैतुल में लोग उनका मंदिर बनाना चाहते थे

एमएन बुच जनता से सीधे जुड़कर काम करते थे। वे 1962 से जनवरी 1965 तक बैतूल के कलेक्टर रहे। उस दौरान बुच से आमजन सीधे मिल सकते थे। उनसे मुलाकात के लिए किसी सहायक की जरूरत नहीं पड़ती थी। बुच पूरे जिले में दौरा करते थे और जो एक बार मिल गया उसे नामजद याद रखते थे। ऐसा बहुत कम होता है कि कोई कलेक्टर जनता से इस तरह जुड़ जाए। जब उनकी नई पोस्टिंग हुई तो बैतूल के लोग उन्हें विदा करने के लिए रेलवे स्टेशन तक आए और रो पड़े। बाद के वर्षों में कुछ लोगों ने वहां उनका मंदिर बनाने की योजना बनाई। बुच ने ही लोगों को समझा-बुझाकर ऐसा करने से रोका।

न्यू मार्केट में पार्किंग स्पेस का मामला

एमएन बुच के कार्यकाल में ही न्यू मार्केट का निर्माण हुआ। न्यू मार्केट की परिकल्पना में पार्किंग स्पेस अधिक रखने पर उनकी आलोचना हुई। उस समय कई प्रभावशाली और आमजन इसे गैरजरूरी बता रहे थे। बुच ने देश के अन्य शहरों के विकास और वहां होने वालीं दिक्कतों का हवाला दिया और वे न्यू मार्केट में अपने मनमाफिक पार्किंग स्पेस रखने में सफल हो गए। बाद के वर्षों में जब नया कॉफी हाउस और समन्वय भवन बना तो बुच ने अपनी आपित भी दर्ज कराई।

नौकरी की नहीं, नियमों की परवाह

जब वे दिल्ली डेवलपमेंट अथॉरिटी (डीडीए) के वाइस चेयरमैन थे, तब पुराने शहर में अतिक्रमण के खिलाफ मुहिम चली थी। संजय गांथी इसमें खासी रुचि ले रहे थे। एक दिन तत्कालीन वित्तमंत्री हेमवतीनंदन बहुगुणा ने उन्हें बुलाया और कहा- 'जो दुकानें टूटी हैं उन्हें दुरुस्त कराओ और इसके साथ ही शाही इमाम को 30 लाख रुपए दिए जाएं।' नियम-कायदों के पक्के बुच ने वहीं जवाब दिया- 'इमाम साहब वक्फ के नौकर हैं, मालिक नहीं। उन्हें 30 लाख रुपए हम तो नहीं दे सकते। आप वित्तमंत्री हैं, चाहें तो 30 करोड़ भी दे सकते हैं।' बहुगुणा ने तैश में आकर कहा- नौकरी करनी है या नहीं? बुच का जवाब था- यह बात है तो ऑर्डर कर दीजिए कल ही चले जाएंगे। उन्हें शाम के पहले ऑर्डर मिल गया था।

एमएन बुच के अनुज व गुजरात के पूर्व मुख्य सचिव महेंद्र बुच, रिटायर्ड आईपीएस अफसर केएस ढिल्लन, और रिटायर्ड आईएएस अधिकारी अरुण कुमार पंड्या के संस्मरण

DB (10/06/2015)



एक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में बुच की जिंदगी कई घटनाओं से भरी रही। दिल्ली से लेकर मध्यप्रदेश तक और मध्यप्रदेश में कई जिलों से लेकर भोपाल तक। इन चुनिंदा किस्सों से उनके कामकाज की एक ऐसी शैली सामने आती है, जिससे आज के प्रशासक काफी-कुछ सीख सकते हैं-

हालात काबू में रखने और स्थाई समाधान देने का हुनर खूब था

किलोल पार्क के पास पहले झुगा बस्ती थी। उन्हें हटाया जाना था। बुच ने सीधे कार्रवाई शुरू नहीं की। पहले बस्तीवालों से मिले। उनसे बात की। धेर्य से उनकी जरूरतें समझीं। उन्हें पूरा प्लान समझाया। विकल्प बताए। मुख्यमंत्री प्रकाशचंद्र सेठी थे। एक दिन उनसे कहा कि अब आप दौरा कीजिए। सेठी साहब को डर था कि हटाने के विरोध में पता नहीं बस्ती वाले कहां से पथराव करेंगे। मगर बुच ने आश्वस्त किया। वे गए और यह देखकर हैरत में पढ़ गए कि बस्ती वाले खुद हटने को तैयार थे। उस जगह गार्डन बना। हालात को कैसे काबू में रखना है और स्थाई समाधान देना है, यह हनर उनमें कृट-कृटकर भरा था। काम करने की इस शैली से उनका जमीनी संपर्क गजब का था।

तीखा विरोध हुआ तो मुख्यमंत्री-मंत्री को राजी करने खुद गए

1970 के दशक में तेज बारिश के कारण इकबाल मैदान के दोनों ओर के गेट जर्जर हो गए थे। बुच ने इन्हें तोड़ने का फैसला िलया। इसका तीखा विरोध हुआ। वजह थी कि उसमें से एक गेट के ऊपर कांग्रेस पार्टी का दफ्तर था और वहां रवींद्रनाथ टैगोर की सभा हुई थी। मंत्री और मुख्यमंत्री ने उन्हें बुलाकर चर्चा की। उन्हें विरासत के नाम पर गेट न तोड़ने की सलाह दी। बुच ने जर्जर गेट के कारण संभावित दुर्यटना के साथ राजनीतिक नेतृत्व को यह भी समझाया कि गेट तोड़ने से शहर का ट्रैफिक भी सुधरेगा। आखिर गेट तोड़ने की अनुमति मिल गई और बुच ने मौके पर खड़े होकर ये गेट तुड़वाए।

सुधार की गुंजाइश नहीं, कचरे के डिब्बे में डालिए इसे

पांच साल पहले भोपाल के मास्टर प्लान का ड्राफ्ट बुच की सलाह पर ही नामंजूर हुआ। ड्राफ्ट पर आपितियों की सुनवाई का अंतिम दिन था। तत्कालीन सांसद कैलाश जोशी हर आपित को सुन रहे थे। बुच ने करीब आधा घंटे तक अपने प्रेजेंटेशन में ड्राफ्ट की खामियां बताई। जोशी चुपचाप सुनते रहे। प्रेजेंटेशन खत्म होने के बाद उन्होंने पूछा-'क्या इसमें कुछ सुधार संभव है? या इसे नामंजूर ही करना पड़ेगा।' बुच ने कहा- 'इसमें सुधार की संभावना नहीं। यह कचरे के डिब्बे में डालने लायक है।' जोशी ने कहा- 'ठीक है।' इसके बाद मास्टर प्लान का ड्राफ्ट नामंजुर हो गया।

चट्टानों के बीच बना दिया पार्क

पुराने शहर के किलोल पार्क सिंहत राजधानी के कई पार्क एमएन बुच के कार्यकाल में ही बने। किलोल पार्क जहां बना है, वहां बड़ी-बड़ी चट्टानें हैं। उस समय कई लोगों ने सुझाव दिया कि खुदाई करके चट्टानें हटा दी जाएं, लेकिन बुच इस पक्ष में नहीं थे। वे टोपोग्राफी बदलने के खिलाफ थे। आखिर चट्टानों के बीच में ही वह पार्क बना। बुच ने उनके जमाने में बने पार्कों के नामों के लिए लोगों से सुझाव लिए और उसके बाद मथूर पार्क, वर्धमान पार्क जैसे नाम दिए गए। यही नहीं, इन पार्कों के लिए प्रदेश के बाहर से फूल के पौधे लाए गए। उस समय यह बहुत बड़ी बात थी।

छात्रों की मांग पर लगाया पंप में साइलेंसर

तलैया में रहने वाले सैफिया कॉलेज के कुछ छात्र एमएन बुच से मिले और शिकायत की कि उनके क्षेत्र में जिस पंप से पानी सप्लाई होता है, उसकी तेज आवाज के कारण वे पढ़ाई नहीं कर पाते हैं। छात्रों को उम्मीद ही नहीं थीं कि कोई अफसर उनकी इस बात को सुनेगा भी। लेकिन बुच ने तत्काल नगर निगम के इंजीनियर को मौके पर भेजा। पंप में साइलेंसर लगाया गया। साइलेंसर लगाने के बाद इंजीनियर ने छात्रों से एक सादे कागज पर लिखवाया कि हम इस काम से संतुष्ट हैं और वह बुच को दिया। उसके बाद बुच संतुष्ट हुए।

प्रोफेसर संविता राजे स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेवचर, सगीर बैदार संचालक मुस्लिम एजुकेशन एंड कॅरियर प्रमोशन सोसायटी, गुजरात के पूर्व मुख्य संविद्य महेंद्र बुच के संस्मरण।



एमएन बुच की सबसे बड़ी खासियत ही यह थी कि वे सच को सच की तरह सामने रखते थे। न डर, न स्वार्थ। यही वजह है कि उनकी बात का वजन होता था। वे सिद्धांतों को सबसे ऊपर रखते थे। कानून की बारीकियों का ज्ञान भी गजब का था। पूरी तैयारी के बाद ही कुछ कहते थे और जब कहते थे तो असर होता था।

अर्जुनसिंह से कह दिया था कि तबादला आपका काम नहीं है

1980 के दशक में एमएन बुच जब वन विभाग के सचिव थे, तत्कालीन मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह ने एक रेंजर के तबादले की अनुशंसा की। बुच ने मुख्यमंत्री से कहा - 'यह आपका काम नहीं है।' यह कहते हुए उन्होंने तबादला करने से इनकार कर दिया। मुख्यमंत्री ने जब दबाव बनाया तो बुच ने बजाए तबादला करने के नौकरी छोड़ना बेहतर समझा। बुच के साथ काम करने वाले बताते हैं कि इमरजेंसी के बाद बदले हालातों में बुच को लगने लगा था कि अब स्वतंत्र होकर काम नहीं किया जा सकता। जब उन्हें लगा कि पानी सिर के ऊपर से गुजर रहा है तो नौकरी को अलविदा कहने का साहस दिखाया।

बारीकियों में किसी टेक्नोक्रेट से कम नहीं थे

टाउन प्लानिंग के मामले में एमएन बुच का ज्ञान किसी टेक्नोक्रेट से कम नहीं था। भोपाल का पहला मास्टर प्लान बनाने से लेकर हाल के दिनों तक वे टाउन प्लानिंग से जुड़े हर मुद्दे पर किसी जानकार से भी बेहतर तरीके से राय रखते थे। बुच का यह ज्ञान बहुत कुछ गाँड गिफ्ट जैसा था। टाउन एंड कंट्री प्लानिंग की जिम्मेदारी मिलने के बाद अध्ययनशील बुच ने इस संबंध में हर नामी गिरामी लेखक की पुस्तक का एक विद्यार्थी की तरह अध्ययन भी किया। किसी क्षेत्र में नई योजना की बात हो, बुच मौके पर पहुंच जाते और योजना से होने वाले नुकसान का सटीक आकलन करते।

रेतघाट में मौके पर ही बांटा मुआवजा

किसी सरकारी योजना या अन्य वजह से होने वाले विस्थापन में मिलने वाले मुआवजे को लेकर शिकायतें और नाराजगी आम बात है। 1970 के दशक में एमएन बुच ने भोपाल में रेतघाट से बड़ी संख्या में लोगों का विस्थापन कराया और एक भी व्यक्ति नाराज नहीं हुआ। बुच ने मौके पर खड़े होकर मकानों का मुआयना किया, वहीं मुआवजा तय किया और तत्काल चैक पर साइन करके सौंप दिया। यही नहीं, लोगों को उनकी पसंद की जगह चुनने का मौका भी दिया। कुछ लोगों ने कहा उन्हें ऐसी जगह चाहिए जहां से तालाब नजर आए। बुच ने इसका भी ख्याल रखा।

दूधवालों ने हड़ताल की तो पुलिस की गाड़ियों से दूध मंगाया

उज्जैन में जब वे कलेक्टर थे। दूध वालों की जांच-पड़ताल हुई। दूध में पानी की मिलावट पाई गई। कार्रवाई के विरोध में दूध वालों ने मिलकर हड़ताल कर दी। अब उन्हें शहर में दूध की आपूर्ति भी बहाल रखनी थी और दूधवालों के दबाव में भी नहीं आना था। उन्होंने फौरन पुलिस की गाड़ियों से गांवों से दूध लाने का इंतजाम कराया। यह देखकर दूधवालों की हालत पतली हो गई। मगर वे झुके नहीं। पुलिस के वाहनों में दूध मंगाने वह ऐतिहासिक फैसला था। किसी मामले में एक गुंडे ने उन पर एसिड डालने की खुली धमकी दी। वे रात के 12 बजे अकेले ही उसके घर जा पहुंचे। विमल मिल के मजदूर अक्सर कलेक्टर के धर के सामने हंगामा किया करते थे। एक दफा बुच ने कोई दिखे तो फायरिंग के आदेश दे दिए। अगले ही दिन से बिलावजह के वे हंगामे बंद हो गए।

डीडीए में लागू की नई योजनाएं

परंपरागत तरीके से काम करना एमएन बुच को पसंद नहीं था। वे सरकारी कामकाज में हर तरह के अंधविश्वास के खिलाफ थे। दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) का वाइस चेयरमेन रहते हुए उन्होंने डीडीए की कार्यप्रणाली में काफी बदलाव किया। गरीबों और मध्यम वर्ग के लिए मकान बनाना और इसकी कीमत एकमुश्त लेने की बजाय किश्तों में लेना। डीडीए में यह योजना सबसे पहले बुच ने ही लागू की।

पूर्व आईएस अधिकारी अरुण कुमार पंड्या, प्रोफेसर सविता राजे स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर, गुजरात के पूर्व मुख्य सचिव महेंद्र बुच के संस्मरण

DB (12/06/2015)

एक हजार साल पुराने इस शहर को आधुनिक वास्तुशिल्प से रूबरू कराने वाले चार्ल्स कोरिया को श्रद्धांजिल

भारत भवन के लिए बुच ने चुना था चार्ल्स कोरिया को

• अशोक वाजपेयी •

भोपाल में आधुनिक रंग भरे चार्त्स कोरिया ने। इस शहर को आधुनिक बनाने में उनका योगदान यादगार है। भारत भवन और विधान भवन अनूठे वास्तु की रचनाएं हैं। चार्त्स भारत भवन को नॉन-बित्डिंग कहते थे-अभवन। ध्यान दीजिए एक लाख वर्गमीटर में बनी यह ऐसी इमारत है,



जिसे पूरा कहीं से नहीं देखा जा सकता। आप ऊपर से इसमें दाखिल होते हैं। भवन का विस्तार नीचे हैं। भारत भवन में रूपांकर और रंगमंडल के निदेशक बने थे ब.च.कारंत और स्वामीनाथन। उनके समय के भारत भवन के नक्शे में चार्ल्स

ने बब्लाव किए। यह पहली ऐसी इमारत थी, जिसके उद्घाटन के समय ही इससे जुड़ी सारी गतिविधियां शुरू हो गई थीं। तब देशभर में साहित्य, संगीत, कला से जुड़ी सारी जानी-मानी हिस्तयां भोपाल आई थीं। उस मौके पर चार्ल्स का वक्तव्य याद आ रहा है-अगर भोपाल में ये उड़ानें क्रैश हो जाती तो भारतीय

संस्कृति का ही लोप हो जाता। भारत भवन के लिए आर्किटेक्ट के चुनाव का जिम्मा तब बीडीए को सौंपा गया था। चार्ल्स कोरिया का चुनाव करने वाले थे महेश नीलकंठ बुच। उनके चयन में राजनीतिक दखलंदाजी की गुंजाइश तब न के बराबर थी। मैं मानता हुं कि तब बौने लोग सत्ता में नहीं थे। उनके दिल बडे थे। जो चीज वे नहीं समझते थे. उनके लिए विशेषज्ञों पर भरोसा करते थे। इसलिए चार्ल्स के चयन को सहज स्वीकार किया गया। उन दिनों कुमार गंधर्व का आयोजन था। एक बंदिश गाई थी-ये खेल रूप का खेले महाधीर। चार्ल्स ने ये शब्द सुने। बोले-क्या कुमार को यह पता है कि आर्किटेक्चर भी एक खेल है, जो धीरज मांगता है। यह बात तो चंडीगढ के डिजाइनर ला कारबुजिए ने कही थी। चार्ल्स चिकत थे कि कैसे कुमार ने इसे गा दिया? जब नई विधानसभा को बनाया तो उन्होंने चित्रांकन के लिए आदिवासी लोक कलाकारों को मौका दिया। वे तब साबरमती आश्रम से लेकर दिल्ली में क्राफ्ट म्युजियम बना चुके थे। कलाओं में उनकी पैठ गजब की थी। वे पारंपरिक तत्वों में आधुनिक तत्वों को बहुत खूबसूरती के साथ मिलाकर काम करते थे।"

(लेखक भारत भवन के निर्माण के वक्त प्रदेश के संस्कृति सचिव रहे)

बाजार की शक्तियां शहर नहीं बनातीं

• अजय कटारिया •

वे मास्टर आर्किटेक्ट थे। शिक्षाविद तो थे ही। दुनिया भर के स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर में जाते थे। नई पीढ़ी से उनका जीवंत संवाद था। नवी मुंबई के मुख्य आर्किटेक्ट वे ही थे। वर्ष 1972 में उन्होंने मुंबई के भविष्य की कल्पना की थी। वे ४३ साल पहले यह देख रहे थे कि समुद्ध किनारे का यह खूबसूरत शहर आबादी के किस तरह के दबावों को डोलने वाला है। उनका मशहर वक्तव्य है-बाजार की शक्तियां शहर नहीं बनातीं, बल्कि उन्हें बर्बाद करती हैं। वे शहरी डिजाइन में ओपन और कवर्ड रपेस का खास ख्याल रखते थे। भोपाल में भारत भवन की डिजाइन में उसकी शानबार डालक दिखाई देती है। भारत भवन अपने खास डिजाइन की बढ़ौलत ही एक साथ आर्ट, कल्चर और आर्किटेक्चर का आकर्षक उदाहरण बना। यह ओपन और कवर्ड रूपेस की गजब की शंखला है. जिसका विस्तार आपको हर कदम पर हैरत में डाल देता है। उनकी रचनाओं में स्थानीय सामग्री और स्थानीय तकनीक दोनों का ही इस्तेमाल हुआ है। इसके लिए उनके स्थानीय विशिष्टताओं के गहरे अध्ययन की दाद देनी होगी। विधानसभा में भी यही किया। चार्ल्स बड़े शहरों के आसपास छोटे शहरों को भी उसी अनुपात में विकसित करने के पक्षधर थे। नई पीढ़ी को वास्तु में सीखने के लिए उनका दिया हुआ काफी काम आएगा।" (लेखक वास्तुविद हैं)

सच्ची श्रद्धांजिल भविष्य के भोपाल में एमएन बुच और चार्ल्स कोरिया का विजन बरकरार, सरकार का फैसला-

शहर की मूल पहचान कायम रहेगी

बीते दो हफ्तों में शहर की आत्मा से जुड़ी दो हस्तियों ने हमें अलविदा कहा। छह जून को या, जिन्होंने बाद में नई विधानसभा भी बनाई। बेजोड़ स्थापत्य के साथ एक उम्दा आबोहवा महेश नीलकंठ बुच नहीं रहे। 16 जून को आर्किटेक्ट चार्ल्स कोरिया के गुजरने की खबर वाले शहर की रचना दोनों की खूबी थी। सरकार के तीन फैसले ऐसे हैं, जो भविष्य के भोपाल आई। दोनों का भोपाल से गजब का रिश्ता था। प्रशासक के रूप में बुच ने शहर को आधुनिक के प्रति आशा जगाते हैं। भास्कर ने बुच और कोरिया को करीब से जानने वालों से समझा पहचान दी थी। भारत भवन की रचना के लिए बुच ने ही चार्ल्स के चयन का सुझाव दिया

कलदीप सिंगोरिया | भोपाल

शहर की नई पहचान बनने जा रही देश की पहली लाइट मेटो के साथ तालाब, हरियाली और पहाडियां भी बची रहें, इसकी कोशिशें शुरू हो गई हैं। शहर का कोर एरिया अरेरा कॉलोनी, अरेरा हित्स, स्थामला हिल्स आदि की मूल पहचान बनी रहे, इसके लिए सरकार ने अब फैसला लिया है कि यहां अतिरिक्त निर्माण की अनुमति नहीं दी जाएगी। यानी इन इलाकों में मेट्रो के प्रस्तावित कॉरिडोर के दोनों ओर 500-500 मीटर तक न तो फ्लोर एरिया रेशो (एफएआर) बढाया जाएगा और न ही पर्यावरण से छेडछाड होगी। यही नहीं यहां ब्रीदिंग स्पेस यानी खुले क्षेत्र को भी बरकरार रखा जाएगा। शहरी नियोजन के दोनों प्रमुख स्तंभों, बुच और कोरिया को यही सरकार की श्रद्धांजलि है।

शहर का पहला मास्टर प्लान बच ने ही बनाया था। सरकार उन्हीं मानकों को शहर के कौर एरिया में बरकरार रखेगी। यानी यहां न तो ज्यादा ट्रैफिक बढ़ेगा और न ही बसाहट। मेटो टेन के लिए मास्टर प्लान में फेरबंदल का जो मसौदा बनाया जा रहा है, उसमें ऐसे ही प्रावधान किए गए हैं। इस मसौदे में सिर्फ शहर के बाहरी हिस्से में ही एफएआर बढाने और बेचने के प्रावधान रहेंगे। नगरीय विकास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय का कहना है कि इस इलाके के एफएआर से छेडछाड नहीं होगी।





नहीं बढ़ेगा कोर एरिया का एफएआर लालघाटी, चूना भट्टी, अरेरा कॉलोनी आदि में तय एफएआर 0.75 को नहीं बढाया जाएगा। यानी यहां

लोग तय मानकों से ज्यादा निर्माण नहीं कर सकेंगे।

हाइराइज के लिए भी नहीं बढ़ेगा शहर के बाहरी हिस्सों में भी हाइराइज इमारत बनाने के लिए अतिरिक्त एफएआर नहीं दिया जाएगा। इस संबंध में मास्टर प्लान में संशोधन किया गया है।

बड़े तालाब से 500 मी दूर निर्माण नहीं बड़े तालाब, नदियों, नालों से निर्माण की दूरी की सीमा बढ़ाई जाएगी। बड़े तालाब से 500 मी., नदियों से 50 और नालों से 30 मी. की दर तक निर्माण नहीं होंगे।

सीख लेकर हमें यह करना होगा

नजिरिया – बुच अरेरा कॉलोनी की तरह लो डेंसिटी पसंद करते थे, लेकिन यह एक पहलू है। दूसरा पहलू यह है कि उन्होंने ही उस वक्त शहर की सबसे ऊंची इमारतें बनाई। यानी हम आज की जरूरत के हिसाब से शहर के बाहरी इलाकों में ऊंची बिल्डिंग बना सकते हैं, लेकिन बुच की इस सलाह को ध्यान में रखकर कि टैफिक और पार्किंग का मैनेजमेंट हो।

सर्वती – किस्सा वर्ष 2003-04 का है। हबीबगंज याने के पास रोड़ के दूसरी ओर सरकार ने लैंडयूज को कमिशियल करने का प्रस्ताव प्रकाशित कर दिया। बिल्डर ने यहां शॉपिंग कॉम्पलेक्स का काम शुरू कर दिया। बुच को पता चला तो बोले- मेरी लाश पर ही यह इमारत बनेगी। काम रुक गया। दूसरा किस्सा भी ई-3 में उनके घर से कुछ ही दूरी पर एक मकान का है। यहां भी बुच के नजदीकी मित्र ने मल्टीस्टोरी बिल्डिंग का काम शुरू कर दिया। बुच अड़ गए। आखिर उन्हें बच की बात माननी पड़ी।

संवेदनशीलता – बुच का मानना था कि शहर एक जीवभारी रचना है। इसलिए विकास की प्लानिंग करते वक्त नगर नियोजक को यह तथ्य सामने रखना चाहिए। यदि कोई इसे नहीं मानेगा तो उसकी रचना पुस्तकों में रह जाएगी या जनता को अत्यधिक कष्ट पहचाकर क्रियान्वित होगी।

5 खामियां मौजूदा मास्टर प्लान की

- 1 बड़े तालाब के लेक फ्रंट में लो डेंसिटी वाली ग्रातिविधियां प्रस्तावित कीं। बिना प्रभाव जाने लैंडयूज़ बढ़ल दिए गए।
- 2 अवध्पुरी. कटारा और कोलार में फैलाव का अनुमान नहीं तमाया। कमर्शियल गतिविधियों की भी गलत प्लाविम।
- 3 प्रस्तावित सङ्कें सिर्फ वक्शे पर हैं। हकीकत में वहां पहले से ही विमीण थे, इसिलए वहीं बर्वी।
- 4 ग्रीन बेल्ट को सुरक्षित रखने की कोशिष्ट नहीं हुई। बाहरी इलाकों में ग्रीन बेल्ट प्रस्तवित नहीं।
- 5 ट्रैंफिक की बढ़ती जरुरत का गतत अनुमान। इसतिए बेर्ड ऑफिस चैराह्म जैसे बाद में बिकसित इलाकों में भी ट्रैंफिक जमा

हर मुश्किल का समाधान

तेजी से बढ़ते शहरों में नई चुनीतियों हैं। फिर भी बुच और कोरिया के काम में ह्री इन चुनीतियों से निपटने का समाधान भी है। देखिए कैसें। टाउन प्लानिंग में हाइराइज को शामिल किया जाए, लेकिन बुच के ओपन स्पेस और ट्रैफिक वाले प्रावधान के साथ। कोरिया ने मुंबई में जैसी कंचनजंधा बहुमंजिला इमारत की डिजाइन बनाई। खुली-खुली, हवादार और हर कोने में सूर्य के किरणें पहुंचने वाली। वैसी ही प्लानिंग हमारे यहां की हाइराइज इमारतों में की जाए।

5 खासियतें बुच के मास्टर प्लान की

- 1 बुच ने ताताब, हरियाती और पहाड़ियों के संरक्षण को केंद्र में रखते हुए सारटर प्लान का खाका तैयार किया।
- 2 जहां जरूरी, वहीं हाइराइज इमारतें प्रस्तावित कीं। जैसे न्यू मार्केट के आसपास पंचानन, बेतवा आदि।
- 3 पहली हिंग रोड प्रस्तवित की, लेकिन बुच के बाद के प्रशासकों ने कभी इस पर ध्यान नहीं दिया। अब भी यह बेरुखी का शिकार।
- 4 एकरूपता और शहर के एक हिस्से को दूसरे से जेड़ने के प्रावधान। भेत, बैसगढ़ और नए शहर को आपस में जोड़ा।
- 5 सामाजिक-आर्थिक जरुरतों का प्तान। रोजगार के लिए औद्योगिक क्षेत्र प्रस्तावित किए।

विरासत को आगे बढ़ाने वाले कदम

टीएंडसीपी बिल्डिंग हो, आईएसबीटी हो या स्कूल ऑफ गुड गवर्नेस की इमारत। सबमें एक खास बात है। सरकारी



होकर भी यह इमारतें दोस्त की तरह लगती हैं। ठीक बैसे ही जैसे चार्ल्स कोरिया को डिजाइन की गईं इमारतें। लेकिन इन

इमारतों को डिजाइन किया आर्किटेक्ट अजय कटारिया ने। ऐसे ही युवा आर्किटेक्ट है जी वेंकटेश। शाहपुरा में छोटे से फ्लॉट पर भी मकान के भीतर आंगन दें दिया। बाहर गार्डन।

अब और देर न हो

- 1 गडबड़ियों से भरा मास्टर प्लान-2021 बुच के घोर विशेष के कारण ही निरस्त हुआ। वे नया प्लान चाहते थे, लेकिन बेहतर प्लानिंग के साथ। अब सरकार और बेरी न करे और जल्द से जल्द नया मास्टर प्लान प्रकाशित करें।
- 2 दुच ने हमेशा से शहर के उत्तर और दक्षिणी हिस्से की आपरा में जोड़ने की पैस्ती की। वे रीजनत केतंज से कोडेंफिजा तक एक बिज चाहते थे, जो कि कमला पार्क हिता के समानंतर हो। द्विगम ने इसका प्लाव भी बनाया, लेकिन फिलहाल ठंडे बस्ते में है। इसकी संभावनाओं को सरकार फिर खंगाते।

वैसी ही बारीक नजर जरूरी

वन विद्यार की पहाड़ी उजाड़ थी। बुच ने फेंमिंग करवा दी। आज देखिए, लुहलहा रही हैं। बुच ही चार्ल्स कोरिया को लाए। भारत

भवन को डिजाइन के लिए। उन्होंने भोपाल के हवाई दौर किए। खासियत समझी। टोपोप्राप्त के हिसाब से साइट भी उन्होंने हो तर की। नतीजा, बढ़े तालाब के किनारे एक ऐसी



इमारत बन गई, जो खुद चारूर्प के मुताबिक भवन नहीं- अभवन है। उत्तरते जाइए आप इस इमारत में, ऐसा लगता है जैसे बड़े तालाब का थाट हो। नेचुरल स्लोप का बेहतरीन उपयोग। अने वाले कल के भोपाल के लिए ऐसी ही बारीक नजर जरूरी है।